इन्दौर। बास्केटबॉल स्टेडियम मे ईश्वरीय स्नेह मिलन कार्यक्रम में ब्रह्मावत्सों को संबोधित करते हुए ब्र.कु.शिवानी दीदी।

राजनांदगांव। इंडियन सॉलवेन्ट ग्रुप के मेनेजिंग डायरेक्टर बहादुर अली को ईश्वरीय सौगात देते हुए ब्र.कु.मोहन सिंघल। साथ हैं ब्र.कु.पुष्पा व ब्र.कु.प्राची।

इन्दौर। अटल इन्दौर सिटी ट्रांसपोर्ट सर्विस के स्टाफ को आध्यात्मिकता द्वारा सड़क सुरक्षा विषय पर संबोधित करते हुए ब्र.कु.अनिता बहन

जबलपुर, बरेला। 108 कुंडीय श्री रुद्र महायज्ञ में आये हुए श्रध्दालुओं को परमात्म परिचय देते हुए ब्र.कु.भावना एवं ब्र.कु.मालती।

टिकरापारा (छ.ग.)। बाल व्यक्तित्त्व विकास शिविर में भाग लेने के पश्चात ग्रुप फोटो में ब्र.कु.मंजु बहन, नन्हे मुन्हे बच्चे एवं अन्य।

लूनकरनसर (बीकानेर)। शिवदर्शन यात्रा को शिवध्वज फहराकर रवाना करते हुए तहसीलदार दीनदयाल बाकोलिया,भगीरथ जी एवं ब्र.कु.सत्यवती।

बचें ईर्ष्या और पूर्वाग्रह के रोग से

विश्वभर के डाक्टरों का यह मानना हैं कि उनके पास आने वाले 90 प्रतिशत मरीज मनोदैहिक बीमारियों से ग्रसित होते हैं। क्या आपने कभी इस बात पर गौर किया हैं? नहीं ना? इसका मुख्य कारण है कि मॉडर्न युग के मनुष्य तो केवल निवारण की ही अपेक्षा रखते हैं, कभी कारण की गहराई में जाना कोई नहीं चाहता।

इसीलिए ही तो आज हम हर मर्ज के लिए कोई न कोई गोलियां खाते रहते हैं। आज हर घर में जैसे आचार का डिब्बा रहता है। ऐसे ही गोलियों (दवाई) का भी एक मोटा डिब्बा रहता है। परन्तु क्या हर बीमारी का इलाज चंद गोलियां खाने से हो जाता है? नहीं, ऐसा संभव नहीं, क्योंकि बरसों से हमारे भीतर, हमारी जड़ों तक कुछ ऐसी मानसिक बीमारियों ने अपनी जगह बना ली हैं, जिसका इल्म तक हमें नहीं होता जी हां इन्हीं बीमारियों में से बड़ी खतरनाक एक बीमारी हैं ईर्ष्या और पूर्वाग्रह या पक्षपात।

हममें से कइयों के लिए एसिडिटी की दवाई खाना जैसे एक आम बात है, परन्तु कितने लोग ईर्ष्या रूपी जलन का इलाज पा सके हैं? शायद बहुत कम लोग, क्योंकि जब हमें बीमारी का ही पता नहीं, तो इलाज कहां से और किस चीज का करें? हम आये दिन बातों-बातों में काम, क्रोध, मोह, लोभ, अहंकार को त्यागने की सोचते हैं, परन्तु क्या हमने किसी ईर्ष्या और पूर्वाग्रह या पक्षपात से निजात पाने का उपाय ढूँढ़ा हैं? शायद नहीं।

पूर्वाग्रह एक विलक्षण मानसिक बीमारी हैं, जिसका इलाज करना बड़ा मुश्किल है क्योंकि पूर्वाग्रह से ग्रसित व्यक्ति अपने आपको मानसिक बीमार समझता ही नहीं, इसीलिए वह हर प्रकार के इलाज का तीव्र विरोध करता हैं। ऐसे में वह लोगों की नजरों में केवल तरस और दया का पात्र बनकर रह जाता है। परन्तु हम ऐसे व्यक्तियों को उनके क्रूर दुर्भाग्य के हाथों में छोड़ तो नही सकते ना। अत: हमें उन्हें गुणों के आपरेशन थिएटर में दाखिल कर निस्वार्थ प्रेम रूपी विसंज्ञन दे, शुभकामना रूपी ग्लूकोज चढ़ाकर आध्यात्मिक ज्ञान एवं राजयोग चिकित्सा पद्धति से उन पर सफल शल्य क्रिया करनी होगी, ताकि वह इस महा खतरनाक बीमारी से मुक्त हो सकें।

ईर्ष्या भी पूर्वाग्रह समान बड़ी खतरनाक बीमारी है। दुनिया में शायद ही कोई ऐसा हो जिसने ईर्ष्या के बल पर रेस जीती हो या किसी कार्य में सफलता प्राप्त की हो। ईर्ष्या की अग्नि में जलने वाले न जीवन के वास्तविक तत्वों को हजम कर पाते है और न वह सच को हजम कर पाते है और न वह सच को बर्दाश्त कर पाते हैं। उनके हृदय की धमनियां इस कदर सिकुड़ जाती हैं कि जब वे किसी को प्रगति करता देखते हैं या किसी और को अपने से आगे बढ़ता हुआ देखते है तब जलन वश उन्हें जैसे दिल का दौरा पड़ जाता है। ऐसे व्यक्तियों के अंदर स्वार्थ रूपी जहर उबलता रहता हैं, जो उन्हें चैन से कहीं भी बैठने नहीं देता। पूर्वाग्रहित व्यक्ति शांति की और इलाज की दृढ़ इच्छा रखते हैं। राजयोग चिकित्सा पद्धति ऐसे व्यक्तियों के अन्दर प्रेम एवं शांति का जलाशय निर्माण कर उन्हें इस अग्नि की तपत से मुक्ति दिलाता है।

ईर्ष्या भी पूर्वाग्रह समान बड़ी खतरनाक बीमारी है। दुनिया में शायद ही कोई ऐसा हो जिसने ईर्ष्या का अनुभव न किया हो। ईर्ष्या की अग्नि में जलने वाले न जीवन के वास्तविक तत्वों को हजम कर पाते हैं। और न वह सच को बर्दाश्त कर पाते हैं। स्मरण रहे, ईर्ष्या से नफरत उत्पन्न होती है और यदि हम नफरत से मुक्त होना चाहते है, तो हमें पहले अपने भीतर से ईर्ष्या को निर्वासित करना होगा,क्योंकि जहां ईर्ष्या है, वहां शांति हो नहीं सकती।

स्मरण रहे, ईर्ष्या से नफरत उत्पन्न होती है। और यदि हम नफरत से मुक्त होना चाहते हैं, तो हमें पहले अपने भीतर से ईर्ष्या को निर्वासित करना होगा, क्योंकि जहां ईर्ष्या हैं, वहां शांति हो नहीं सकती। सार्वभौमिक प्रेम ईर्ष्या का मारक है और उसका पोषण केवल ध्यान धारणा से ही किया जा सकता है। तो आइये हम सभी राजयोग की संजीवनी बूटी द्वारा इन महा भयंकर बीमारियों का इलाज कर स्वयं को एवं सारे विश्व को सच्ची मुक्त दिलायें।

प्रभाव...

नहीं बल्कि आगे के कई जन्मों को भी दिव्य और क्षमतावान बना देता है। आलस्य की तुलना चूहे से की जा सकती है जो फूँक मार-मार कर काटता है और दर्द (नुकसान) का पता भी नहीं लगने देता। आज यह आलस्य रूपी चूहा विश्व के सर्वश्रेष्ठ जीव 'मनुष्य' पर सवार है परन्तु गणेश के समान जब ज्ञानी व विघ्न-विनाशक स्थिति प्राप्त कर ली जाती है तो 'आलस्य' का चूहा 'सवार' से 'सवारी' बन जाता है। चूँकि मन पर संस्कार व बुद्धि का प्रभाव पड़ता रहता है और आलस्य का संस्कार आध्यात्मिक पुरूषार्थ में रोड़ा है अत: आलस्य को समूल दग्ध करे बिना श्रीमत पर अक्षरश: चलना सम्भव नहीं है। आलस्य एवं निर्मल-तीव्र बुद्धि का आपस में छत्तीस का आँकड़ा है। आलस्य है तो बुद्धि कुण्ठित हो जाती है और अगर बुद्धि पैनी है तो आलस्य पंगु हो जाता है। बुद्धि की निर्मलता, तीव्रता मन को परमार्थ मार्ग पर आगे ले जाती है और आलस्य का बोझ और अवरोध, मन को पीछे खींच ले जाता है। आत्मा के आध्यात्मिक पुरूषार्थ रूपी नाव में बुद्धि एक 'पाल' है जो लगन के साथ बढ़ती जाती है और आलस्य एक भारी लंगर है जो नाव की यात्रा को शुरू नहीं होने देता। इस आलस्य रूपी लंगर और इसकी बेड़ी को ज्ञान प्रकाश में देखकर योग-अग्नि से नष्ट किया जा सकता है। पाँच विकार, आध्यात्मिक यात्रा या पुरूषार्थ के दौरान स्वत: नष्ट होते जाते हैं परन्तु आलस्य को दृढ़ योग-शक्ति से समाप्त कर सकते हैं। आध्यात्मिक यात्रा और गति नहीं तो जीवन की सार्थकता नहीं। ज्ञान-प्रकाश से इस गुप्त विकार को पहचानें, योग-अग्नि से इसे भस्म करें, दिव्य गुणों की धारणा से इसके पुन: प्रवेश पर रोक लगायें और ईश्वरीय सेवा से व समाज से भी बहिष्कृत कर दें ताकि सतयुगी राज्य का मार्ग खुल जाये।

मंगलोर। विधायक यू.टी.खादेर, विधायक जे.आर.लोबो, विधायक मोहियुद्दीन बावा, ब्र.कु.मृत्युंजय तथा ब्र.कु.विश्वेश्वरी कार्यक्रम के दौरान।

समस्तीपुर। व्यसनमुक्ति प्रदर्शनी का उद्घाटन करते हुए अरूण मलिक, ब्र.कु. अरूणा, श्रीचंद सिंघी, ब्र.कु.कृष्णा तथा अन्य।

नूर कम्पाउण्ड (गया)। ब्र.कु.शीला बुद्धिष्टगणों से आध्यात्मिक ज्ञान चर्चा करते हुए। साथ हैं वैदिक आचार्य पंडित रामाचार्य।